DOCUMENT TITLE: ARCHIVAL RECORD – THE SECOND SAKA OF SIWANA (1589 AD) & RAO KALLA RAYAMALOT

DOCUMENT IDENTIFIER: RHS-ARC-2026-0823

PUBLISHER: REAL HI STORY ARCHIVES

AUTHOR/HISTORIAN: GOVIND MALVIYA

PUBLICATION DATE: 23 AUGUST 2026

LANGUAGES: HINDI & ENGLISH

CLASSIFICATION: INDIAN REGIONAL HISTORY / MARWAR / DINGAL LITERATURE

जीवित वीर का मर्सिया: सिवाना का दूसरा साका और कल्ला रायमलोत का महाबलिदान

उपशीर्षक: इतिहास का एकमात्र योद्धा जिसने रणभूमि में उतरने से पूर्व अपना जीवित मर्सिया सुना और उसके एक-एक छंद को अपने बलिदान से चरितार्थ किया।

1. प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में स्वाभिमान और बलिदान की अनगिनत गाथाएं अंकित हैं, परंतु मारवाड़ के सिवाना दुर्ग के स्वामी **वीर कल्ला रायमलोत** का इतिहास अनुपम है। यह वृत्तांत केवल दो सेनाओं के सैन्य संघर्ष का नहीं, अपितु एक ऐसे राजपूत योद्धा की परम वीरगाथा है जिसने मुगल सम्राट अकबर की सत्ता को चुनौती दी, जीते-जी अपना शोक-काव्य (मर्सिया) सुना और युद्धभूमि में अपनी कसम को पूरा किया।

2. वंशावली एवं वास्तविक पहचान (Genealogy & Identity)

राजस्थानी इतिहास में 'कल्ला' नाम के दो महान योद्धा हुए हैं, जिनके बीच की भिन्नता को समझना ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है:

विवरण	वीर कल्लाजी राठौड़	वीर कल्ला रायमलोत
ऐतिहासिक घटना	चित्तौड़गढ़ का तीसरा साका (1568 ई.)	सिवाना का दूसरा साका (1589 ई.)
पितृत्व / वंश	अचलदास के पुत्र, जयमल राठौड़ के भतीजे	राव मालदेव के पोते, रायमल के पुत्र
उपाधि / पहचान	'चार हाथों वाले देवता'	'कल्ला रायमलोत' (सिवानापति)

- **वंशावली स्पष्टीकरण:** कल्ला रायमलोत मारवाड़ (जोधपुर) के शक्तिशाली शासक **राव मालदेव** के पोते थे। इनके पिता का नाम **रायमल** था। रायमल के पुत्र होने के कारण ही प्रामाणिक ख्यातों में इन्हें '**कल्ला रायमलोत**' कहा गया है।

3. बूंदी की राजकुमारी भानकंवर एवं मुग़ल सत्ता को चुनौती

कल्ला रायमलोत और मुग़ल सम्राट अकबर के बीच सीधे संघर्ष का मूल कारण बूंदी की राजकुमारी **हाड़ी रानी भानकंवर** से उनका विवाह था।

- **अकबर की कूटनीति:** बूंदी के राव सुरताण हाड़ा की पुत्री राजकुमारी भानकंवर अत्यंत रूपवती और साहसी थीं। अकबर इस राजकुमारी का विवाह अपने शहजादे सलीम (भावी जहांगीर) से कराना चाहता था।
- **कल्ला की ललकार:** जब यह समाचार कल्ला रायमलोत तक पहुँचा, तो उन्होंने मुग़ल साम्राज्य के खौफ की परवाह न करते हुए राजपूत आन-बान-शान के तहत भानकंवर से स्वयं विवाह करने का निर्णय लिया और सफलता पूर्वक विवाह संपन्न किया।

4. काबुल/अटक का मोर्चा एवं शाही मनसबदार का वध

विवाह के इस दुस्साहस से चिढ़कर अकबर ने कल्ला को नीचा दिखाने और ठिकाने लगाने के उद्देश्य से साम्राज्य के सबसे दुर्गम मोर्चे–**अटक/काबुल सीमांत** पर तैनात कर दिया।

- **घटनाक्रम:** उस विषम भौगोलिक स्थिति में भी कल्ला रायमलोत पूरी एंठ और अपने पारंपरिक **केसरिया बाने** में रहते थे।
- **विवाद एवं वध:** वहाँ तैनात एक शाही मुग़ल अधिकारी (लाहौर/अटक का शाही काज़ी या मनसबदार) ने कल्ला के केसरिया वस्त्रों पर व्यंग्य कसते हुए कहा– *"कल्ला जी! जब युद्ध चल ही नहीं रहा, तो यह केसरिया बाना पहनकर क्यों स्वांग रचा रखा है?"*
- अपनी पोशाक और राजपूत स्वाभिमान पर कटाक्ष सुनते ही कल्ला ने बिना एक क्षण गंवाए म्यान से तलवार निकाली और **एक ही वार में उस मुग़ल अधिकारी का सिर धड़ से अलग कर दिया**। इसके उपरांत वे शाही हुक्म की अवहेलना करते हुए सीधे अपने दुर्ग **सिवाना** लौट आए।

5. सामेला प्रसंग एवं शहजादे सलीम का अपमान

विवाह के उपरांत जब मुग़ल लश्कर ने सिवाना के आसपास दबाव बनाने का प्रयास किया, तो **सामेला** (बारात एवं अतिथियों के स्वागत की पारंपरिक रस्म) के अवसर पर कल्ला ने अपनी उग्र वीरता और कठोर तेवरों से मुग़ल प्रतिनिधियों एवं सलीम के लश्कर को कड़ा सबक सिखाते हुए अपमानित कर खदेड़ दिया।

6. अद्वितीय ऐतिहासिक परिघटना: जीवित मर्सिया का वाचन

डिंगल (प्राचीन राजस्थानी वीर रस) साहित्य में '**मर्सिया**' वह शोक-काव्य है जो किसी वीर की मृत्यु के पश्चात उसके सम्मान में रचा जाता है। परंतु कल्ला रायमलोत के संदर्भ में इतिहास की अनोखी घटना घटी:

- **पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल) से मांग:** बीकानेर के कवि-राजकुमार और अकबर के दरबार के विद्वान **पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल)** कल्ला के परम मित्र थे। कल्ला ने उनसे कहा– *"हे पीथल! मृत्यु के बाद मर्सिया किसने सुना? मुझे मेरे जीवित रहते ही सुनना है कि मेरे जाने के बाद तुम मेरी वीरता पर क्या छंद रचोगे।"*
- **मर्सिए का वाचन:** पृथ्वीराज राठौड़ ने अपने मित्र की मांग पर '**कल्ला रायमलोत रा मर्सिया**' की रचना की। कल्ला ने युद्ध में उतरने से पूर्व अपने सामंतों के समक्ष उन छंदों

को पढ़ा और कसम खाई कि वे रणभूमि में इस काव्य की एक-एक पंक्ति को सच सिद्ध करेंगे।

7. सिवाना का दूसरा साका (1589 ई.) – संपूर्ण घटनाक्रम

- **'राठौड़ बनाम राठौड़' रणनीति:** अकबर ने सिवाना के 'अणखलो दुर्ग' को जीतने के लिए जोधपुर के **मोटा राजा उदयसिंह** (कल्ला के सगे काका) और मुग़ल सेनापति **शाहबाज़ खान** के नेतृत्व में संयुक्त सेना भेजी।
- **दुर्ग की घेराबंदी:** शाही सेना ने महीनों तक दुर्ग को घेरे रखा। जब रसद और जल का संकट उत्पन्न हुआ, तो कल्ला ने '**साका**' करने का निर्णय लिया।
- **हाड़ी रानी भानकंवर का जौहर:** युद्ध से पूर्व राजकुमारी **भानकंवर** के नेतृत्व में सैकड़ों राजपूत वीरांगनाओं ने दुर्ग में अग्निकुंड प्रज्वलित कर **जौहर** का अनुष्ठान पूरा किया।
- **केसरिया और अंतिम आक्रमण:** दुर्ग के द्वार खोलकर कल्ला रायमलोत और उनके 5,000 समर्पित वीरों ने शत्रु सेना पर धावा बोल दिया। दोनों हाथों में तलवारें लेकर कल्ला ने मुग़ल सेना का संहार किया। ख्यात परंपरा के अनुसार, अत्यधिक घाव खाने के बाद शीश कट जाने पर भी उनका धड़ शत्रु सैनिकों को काटता रहा और दुर्ग के मुख्य द्वार के निकट धराशायी हुआ।

8. प्राथमिक ऐतिहासिक साक्ष्य (Primary Sources)

1. **मुहणौत नैणसी री ख्यात:** कल्ला की सही वंशावली, विवाह और सिवाना के साके का प्रामाणिक विवरण।
2. **बांकीदास री ख्यात:** सामेला प्रसंग, काबुल मोर्चे की घटना और जीवित मर्सिया का वर्णन।
3. **'राठौड़ कल्ला रायमलोत रा मर्सिया' (हस्तप्रति):** मूल छंद **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर)** में सुरक्षित।
4. **डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ('जोधपुर राज्य का इतिहास'):** 1589 ई. के साके की ऐतिहासिक पुष्टि।

© 23 August 2026, REAL HI STORY (Govind Malviya).

The Living Warrior's Elegy: The Second Saka of Siwana and Kalla Rayamalot's Sacrifice

Subtitle: The documented history of the only warrior who listened to his own death poem (*Marsiya*) while alive and fulfilled every verse on the battlefield.

1. Introduction

Indian history contains countless sagas of valor and sacrifice, yet the historical record of **Rao Kalla Rayamalot**, lord of Siwana Fort in Marwar, remains extraordinary. This account documents a warrior who openly defied Emperor Akbar, celebrated his impending death through poetry, and upheld his oath on the battlefield.

2. Lineage and True Identity

To resolve historical ambiguity, a clear distinction must be made between two prominent warriors named 'Kalla' in Rajasthani history:

Comparative Parameter	**Veer Kallaji Rathore**	**Veer Kalla Rayamalot**
Historical Event	3rd Saka of Chittorgarh (1568 AD)	2nd Saka of Siwana (1589 AD)
Lineage	Son of Achaldas, Nephew of Jaimal	Grandson of Rao Maldev, Son of Raymal
Historical Epithet	'Four-Armed Deity'	'Kalla Rayamalot' (Lord of Siwana)

- **Genealogical Clarification:** Kalla Rayamalot was the grandson of **Rao Maldev** of Marwar (Jodhpur) and the son of **Raymal**. Owing to his parentage, primary historical chronicles (*Khyats*) identify him as **'Kalla Rayamalot'**.

3. Princess Bhan Kanwar of Bundi and Defiance of Imperial Power

The primary catalyst for conflict between Kalla Rayamalot and Emperor Akbar was Kalla's marriage to **Princess Bhan Kanwar** of Bundi.

- **Imperial Ambition:** Princess Bhan Kanwar, daughter of Rao Surtan Hada of Bundi, was highly regarded for her courage and beauty. Emperor Akbar intended to marry her to Prince Salim (later Emperor Jahangir).
- **Kalla's Interception:** Upholding Rajput honor, Kalla Rayamalot defied imperial authority and married Princess Bhan Kanwar himself, provoking severe hostility from the Mughal court.

4. The Attock Frontier Deployment and Slaying of the Imperial Official

To suppress Kalla, Akbar posted him to the hostile northwestern frontier of **Attock/Kabul**.

- **The Altercation:** Even on this harsh frontier, Kalla continuously wore his traditional **saffron war attire (Kesariya Baana)**.
- **The Slaying:** A senior imperial official mocked Kalla's robes, asking: *"Kalla Ji! Why wear war attire when no battle is underway?"* Outraged by the insult to his pride, Kalla unsheathed his sword and **decapitated the officer in a single stroke**. He then abandoned the post and returned to **Siwana Fort**.

5. The Samela Incident and Defiance of Prince Salim

During the post-wedding reception rituals (**Samela**), imperial forces attempting to intimidate Kalla were met with fierce resistance. Kalla humiliated and drove back Prince Salim's representatives, escalating the feud with Delhi.

6. An Unprecedented Legacy: Reading His Own 'Marsiya'

In Dingal literature, a **'Marsiya'** is an elegy written post-mortem to honor a fallen hero. Kalla Rayamalot reversed this centuries-old tradition:

- **Demand to Prithviraj Rathore (Pithal):** Prince Prithviraj Rathore of Bikaner, a scholar at Akbar's court and Kalla's close friend, was asked by Kalla: *"Who hears his own Marsiya after death? I wish to hear while alive how you will poeticize my martyrdom."*
- **Composition & Recitation:** Prithviraj composed **'Rathore Kalla Rayamalot Ra Marsiya'**. Kalla read these verses before his warriors prior to battle and swore to fulfill every verse through his actions.

7. The Second Saka of Siwana (1589 AD) — Chronicle of Battle

- **Imperial Strategy:** Akbar dispatched **Mota Raja Udai Singh** of Jodhpur (Kalla's uncle) alongside imperial commander **Shahbaz Khan** to besiege Siwana.
- **The Siege:** After months of tight siege, resources within the fort were exhausted, leading Kalla to declare **Saka**.
- **Jauhar of Bhan Kanwar:** Prior to the final assault, Princess **Bhan Kanwar** led hundreds of Rajput women into the sacred fire of **Jauhar**.
- **The Final Charge:** Donning saffron turbans, Kalla and 5,000 Rathore warriors opened the fort gates. Wielding dual swords, Kalla inflicted heavy casualties. According to *Khyat*

tradition, his headless torso continued fighting near the main gate before finally collapsing.

8. Primary Historical Sources

1. **Muhton Nainsi ri Khyat:** Validates Kalla's exact genealogy, marriage, and the Siege of Siwana.
2. **Bankidas ri Khyat:** Records the Attock execution, Samela incident, and live *Marsiya* reading.
3. **'Rathore Kalla Rayamalot Ra Marsiya' Manuscripts:** Preserved at the **Rajasthan Oriental Research Institute (Jodhpur)**.
4. **Dr. G.H. Ojha ('History of Jodhpur State'):** Confirms the chronological accuracy of the 1589 AD Saka.

© 23 August 2026, REAL HI STORY (Govind Malviya).